गाँधी स्टडी सर्किल, कमला नेहरू कॉलेज

वार्षिक रिपोर्ट

सत्र 2020-21

“अवलोकन”

"खुद वो बदलाव बनिए जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं"।

महात्मा गाँधी के ये शब्द कमला नेहरू कॉलेज के गाँधी स्टडी सर्कल को सदैव ही प्रेरित करते रहते हैं। गाँधी स्टडी सर्कल ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने का प्रयास करता है जिससे देश के युवा देश के उज्जवल भविष्य के लिए कार्य करें साथ ही देश की एकता को भी बनाए रखे। माननीय वक्ताओं के वक्तव्यओं के साथ साथ हमारी समिति अकादमिक वार्ता और चर्चा भी आयोजित करती है जिससे हम अपने समाज की वास्तविकताओं को उजागर करने के का एक प्रयास करते हैं।

हालाँकि वैश्विक महामारी के चलते यह वर्ष गाँधी स्टडी सर्कल और सभी के लिए बहुत ही चुनौतीपूर्ण रहा है। इन सभी कठिनाइयों में सबसे बड़ा समर्थन व मार्गदर्शन हमारे शिक्षकों का रहा। उन्होनें हमें बहुत प्रेरित किया है और हमें इस बात के लिए प्रोत्साहित किया है कि जीवन में कठिनाइयों का होना आवश्यक है क्योंकि कठिनाइयों से ही हमें हमारे सामर्थ्य का पता चलता है। इसी के साथ गाँधी स्टडी सर्कल ने नए शैक्षणिक सत्र 2020-21 के प्रारंभ किया । गाँधी जयंती के अवसर पर सत्र का पहला कार्यक्रम "गाँधी उत्सव" का आयोजन किया और इसे सफलतापूर्वक संपन्न भी किया।

"गाँधी उत्सव '20"

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी गाँधी स्टडी सर्किल ने गाँधी जयंती के उपलक्ष्य पर *"गाँधी उत्सव"* का आयोजन किया था। इस वर्ष आयोजन का विषय "गाँधी दर्शन और 21वीं सदी का भारत" था । इस शुभ अवसर पर व्याख्यान का आयोजन किया गया था । गाँधी उत्सव के उपलक्ष्य पर हमारे बीच प्रोफेसर रमेश भारद्वाज और *प्रोफेसर श्योराज सिंह बेचैन* उपस्थित थे।

यह हमारा सौभाग्य था के हमारे मध्य प्रोफेसर श्योराज सिंह बेचैन उपस्थित थे । श्योराज सिंह बेचैन का परिचय सूरज को दीपक दिखाने के समान है। इनके द्वारा लिखित मेरा बचपन मेरे कन्धों पर और चमार की चाय पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। राजेंद्र प्रसाद पुरस्कार से सम्मानित प्रोफेसर श्योराज सिंह बेचैन जी ने हमें गाँधी जी के सभी स्वरूपों से अवगत कराया था । उन्होंने हमें बताया के जो गाँधी अफ्रीका में वकालत करते थे वो भारत में सत्याग्रह करने वाले महात्मा गाँधी से भिन्न थे। उनके व्याख्यान से हमें महात्मा गाँधी की सोच उनके विचार को समझने का और महात्मा गाँधी को और करीब से जानने का अवसर मिला। श्योराज सिंह बेचैन के व्याख्यान के द्वारा हमें ये भी समझ आया कि गाँधी जी ने हमेशा स्त्रियों और पिछड़ी जातियों के उत्थान के लिए अपनी आवाज़ भी उठाई और कार्य भी किया।

कई राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित *डॉ रमेश भारद्वाज* जी ने अपने व्यक्तव्य के दौरान कई बार हमें ये सोचने पर विवश किया कि "क्या आज का भारत वही भारत है जिसका सपना महात्मा गाँधी ने देखा था?" प्रोफेसर साहब ने अपने व्याख्यान में समाज में बढ़ते अपराधों और ऊँच- नीच की भावना के बारे में अपने विचार रखे साथ ही उन्होंने गाँधी जी के विचारों के बारे में चर्चा की। उनका वक्तव्य सुन कर हम सभी ने गाँधी जी के विचारों को ना केवल समझा अपितु आज हमें ये भी ज्ञात हुआ के हमारे प्रिय बापू को महापुरुष की उपाधि क्यों दी गई है।

दोनों वक्ताओं के वक्तव्य को सुनकर हम सभी को गाँधी के सपनों के भारत को समझने का अवसर मिला। व्याख्यान के समाप्ति के पश्चात दोनों ही वक्ताओं से छात्रों ने कई प्रकार के प्रश्न किये। वक्ताओं द्वारा दिए गए जवाबों के माध्यम से सभी को गाँधीवादी विचारधारा को समझने का एक अवसर प्राप्त हुआ।

इसके साथ ही कार्यक्रम में हमारी अध्यापक संयोजक डॉ. संगीता वर्मा उपस्थित रहीं। अन्य अध्यापकगणों में डॉ. मैत्रीयी कुमारी, डॉ. रजत रानी आर्य, डॉ. कांति मीणा एवं डॉ. सुषमा चौधरी भी उपस्तिथ रहीं ।

कार्यक्रम का आरम्भ हमारी अध्यापक संयोजक डॉ. संगीता वर्मा द्वारा किया गया था। कार्यक्रम की शुरुआत में *"वैष्णव जन तो तेने कहिये"* गीत की प्रस्तुति मंजरी कुमारी द्वारा दी गई। कार्यक्रम का

समापन *"रघुपति राघव"* गीत के द्वारा हुआ जिसको प्रिया शुक्ला ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में कुल 70- 75 छात्रायें उपस्थित रही।

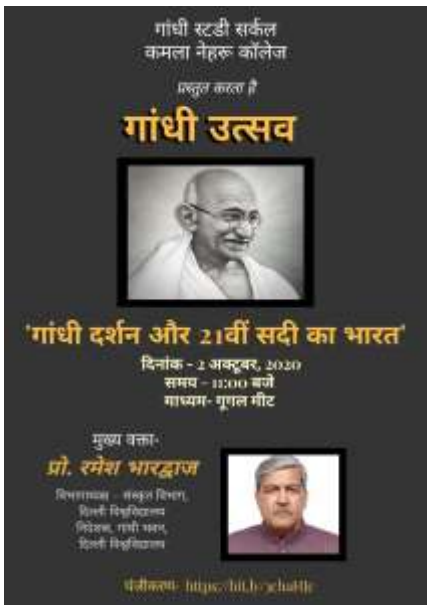

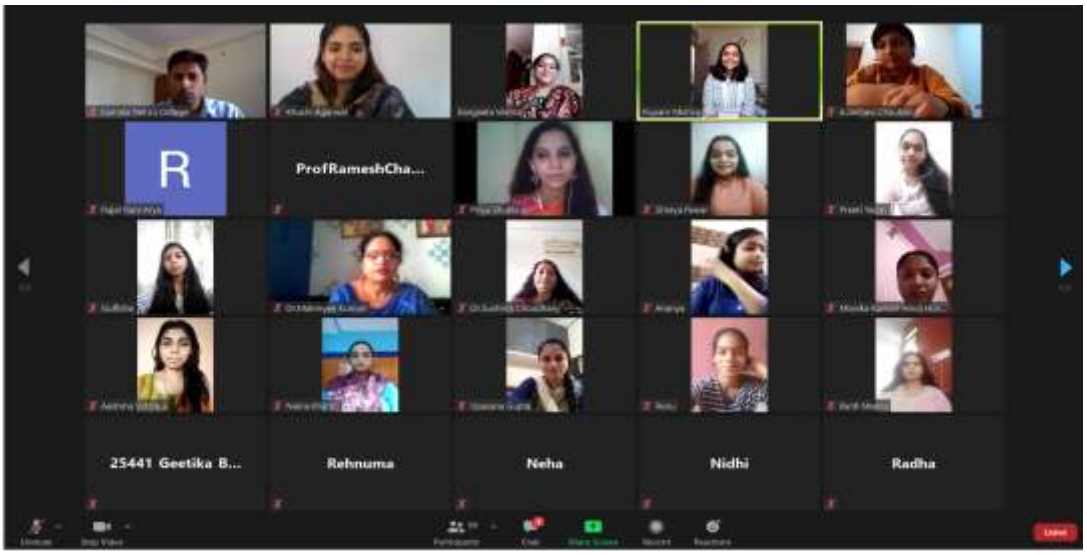

“ओरियंटेशन 2020-21”

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी गाँधी स्टडी सर्कल ने *23 नवम्बर,2020* को प्रथम वर्ष की छात्राओं के लिए एक ओरियंटेशन प्रोग्राम को बहुत ही उत्साह के साथ आयोजित किया परन्तु वर्तमान परिस्थितियों को

देखते हुए और वैश्विक महामारी के चलते यह ओरियंटेशन प्रोग्राम *गूगल मीट* पर आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों ने काफ़ी उत्साह और उत्सुकता दिखाई। हमारे पुराने सदस्यों और गाँधी स्टडी सर्किल के कोर सदस्यों ने कार्यक्रम को बहुत ही अच्छे तरीके से सम्पन्न किया।

कार्यक्रम की शुरुआत हमारी सोशल मीडिया हेड श्रेया पवार ने बड़े ही सुनियोजित तरीक़े से की। ओरिएंटेशन प्रोग्राम में हमारी शिक्षक संयोजिका डॉ. संगीता वर्मा जी भी हमसे जुड़ी। कार्यक्रम को रूपम, सृष्टि, प्रीति, प्रिया, तनुजा और अनन्या ने आगे बढ़ाया । इसके साथ-साथ कोर टीम के सभी सदस्यों ने गाँधी स्टडी सर्कल से जुड़े अपने विचारों और अनुभवों को प्रथम वर्ष की छात्राओं के साथ साझा किया।

नवागंतुक छात्राओं ने सोसाइटी से जुड़े उनके मन में उठ रहे प्रश्नों को पूछा और हमारी सोसाइटी की छात्रा संयोजिका रूपम औऱ सृष्टि ने सभी के प्रश्नों का उचित उत्तर दिया और साथ साथ गाँधी स्टडी सर्किल की विशेषताओं से भी उन्हें अवगत कराया,जिसे सुनकर उन्हें हमारी समिति को करीब से जानने का अवसर प्राप्त हुआ। कार्यक्रम में लगभग 100 छात्राएं हमारे साथ जुड़ी ।

अतः गाँधी स्टडी सर्कल का ओरियंटेशन प्रोग्राम बहुत ही सफलता पूर्वक संपन्न हुआ।

"गाँधी वंदन"

ऐनक पहने लाठी पकड़े चलते थे वो शान से
ज़ालिम कांपे थर थर थर थर सुनकर उनका नाम रे

30 जनवरी 2021 को शहीद दिवस के उपलक्ष्य पर गाँधी स्टडी सर्कल, कमला नेहरू कॉलेज द्वारा "गाँधी वंदन" का आयोजन किया है। गाँधी वंदन का विषय "बदलते दौर में गाँधी जी की याद" रखा गया। इस अवसर पर प्रोफेसर आशुतोष और डॉ. इंदु बघेल आमंत्रित वक्ता थे। कार्यक्रम की शुरुआत छात्र संयोजक रूपम मिश्रा की।

प्रोफेसर आशुतोष का परिचय देना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। डॉ. आशुतोष दिल्ली विश्वविद्यालय हिंदी विभाग में कार्यरत हैं। वे अलिगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में अध्यापन का कार्य भी कर चूके हैं। इनके विभिन्न आलोचक लेख कई पत्र-पत्रिकाओं और इ-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके हैं। प्रोफेसर आशुतोष ने अपने वक्तव्य के दौरान हमें गाँधी जी की विचारधारा से अवगत कराया। उन्होंने हमें ये समझाया की गाँधी जी ने किसी पर भी अपनी विचारधारा थोपने का प्रयास नहीं किया अपितु उन्होंने ने स्वतंत्रता आंदोलन को जन आंदोलन में परिवर्तित किया। आज के दौर सबसे बड़ी समस्या ये है के यदि एक व्यक्ति के विचार दूसरे व्यक्ति से नही मिलते तो आपसी सम्मान का भाव भी समाप्त हो जाता है किंतु गाँधी जी के समय ऐसा नही था। गाँधी जी और नेता जी के विचारों में अंतर था किंतु दोनों का ही एक दूसरे के प्रति सम्मान का भाव था। प्रोफेसर साहब ने हमें बताया के गाँधी जी के अहिंसा का मतलब आत्मनिर्बलता या कायरता नही था अपितु अहिंसा का अर्थ सत्य था।

इंदु बघेल (पीएचडी), सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, भारती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय हैं। इन्हें 18 वर्ष से अधिक का शिक्षण अनुभव प्राप्त है। डॉ. इंदु बघेल ने कई पुस्तकें भी लिखी हैं और राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशनों में इनके कई शोध पत्र प्रकाशित किए हैं। इनकी विशेषज्ञता के क्षेत्र पुर्तगाली, अफ्रीका और स्थानीय स्वशासन (पंचायती राज), भारत सरकार और राजनीति, भारतीय राजनीतिक विचार, नागरिकता हैं। इन्हें ICSSR 2009-10 की पोस्ट डॉक्टरल फेलोशिप के लिए चुना जा चुका है। अपनी पीएचडी वर्ष 2002 के दौरान इन्हें आंशिक सहायता भी प्रदान की गई थी। डॉ. इंदु बघेल ने हमें स्वराज का सही अर्थ समझाया स्वराज अर्थात स्वयं पर साशन करना, स्वयं शिक्षित कर आत्मनिर्भर बनाना। मैडम ने सभी छात्राओं को समझाया कि हिंसा से निकला हुआ हल अल्पावधि (short term) के लिए होता है किंतु अहिंसा से निकाला गया अर्थ दीर्घकालिक (long term) होता। गाँधी जी ने अपने सत्य को अपना ईश्वर बनाया और उस सत्य ने देश की स्वतंत्रता में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया।

दोनों ही वक्ताओं ने छात्राओं के सभी प्रश्नों का उत्तर दिया जिससे हम सभी को सत्य और अहिंसा का सही अर्थ समझ आया।

कार्यक्रम का संचालन हमारी अध्यापिका संयोजिका डॉ. संगीता वर्मा ने किया। अन्य अध्यापक गणों में डॉ. मैत्रीयी कुमारी, डॉ. रजत रानी आर्य, डॉ. कांति मीणा एवं डॉ. सुषमा चौधरी भी उपस्तिथ रहीं। कार्यक्रम में लगभग 70 छात्राओं की उपस्थिति रही।

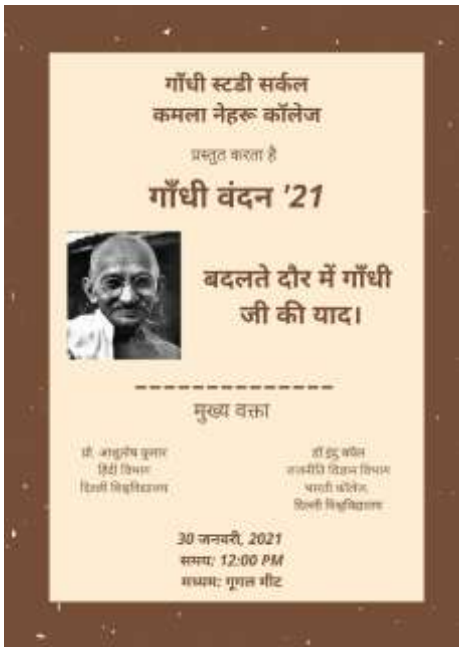
गाँधी स्टडी सर्कल
कमला नेहरू कॉलेज
प्रस्तुत करता है
गाँधी वंदन '21
बदलते दौर में गाँधी जी की याद।
मुख्य वक्ता
30 जनवरी, 2021
समय: 12:00 PM
माध्यम: गूगल मीट

Gandhi Vandan'21

"चरखा कार्यशाला"

चरखा का महत्व प्राचीन काल से है। घर की महिलाएं अपनी दैनिक गतिविधि के एक हिस्से के रूप में कपड़ा बुनती थीं और चरखा उनके दहेज का एक हिस्सा हुआ करता था। ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के दौरान, परतंत्र भारत से इंग्लैंड जाने के लिए कच्चे कपास का इस्तेमाल करते थे और तैयार सामग्री भारत में वापस आ जाती थी, जो अत्यधिक कीमतों पर बेची जाती थी, जिससे भारतीय किसानों और आमजनको भारी नुकसान और गरीबी का सामना करना पड़ता था।

महात्मा गाँधी ने चरखे को उठाकर स्वदेशी आंदोलन की शुरुआत की और भारतीयों को अपने स्वयं के कपड़े बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। चरखे से बुने गए कपड़े को खादी या खाददार के रूप में जाना जाता है, जिसका अर्थ है कपड़ा। चरखा आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता का प्रतीक बन गया, इतना ही कि पहले भारतीय ध्वज के बीच में किया गया चरखा को स्थापित था जिसे बाद में अशोक चक्र से बदल दिया गया। 28 अप्रैल 2021 को गाँधी स्टडी सर्कल द्वारा चरखा कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस शुभ अवसर पर डॉ. सीता बिम्ब्रॉ आमंत्रित वक्ता थीं। कार्यक्रम में लगभग 50 बच्चे शामिल हुए।

गांधी स्टडी सर्कल
कमला नेहरू कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय
प्रस्तुत करता है
'चरखा कार्यशाला'
डॉ. सीता बिम्ब्रॉ
के साथ
दिनांक - 28/4/2021
समय - 1:15 बजे
माध्यम - गूगल मीट
पंजीकरण लिंक:
http://forms.gle/uzRxETecKo7WQkMJA
प्राचार्या
डॉ. कल्पना भाकुनी
संयोजिका
डॉ. संगीता वर्मा
7291888760
9517139759

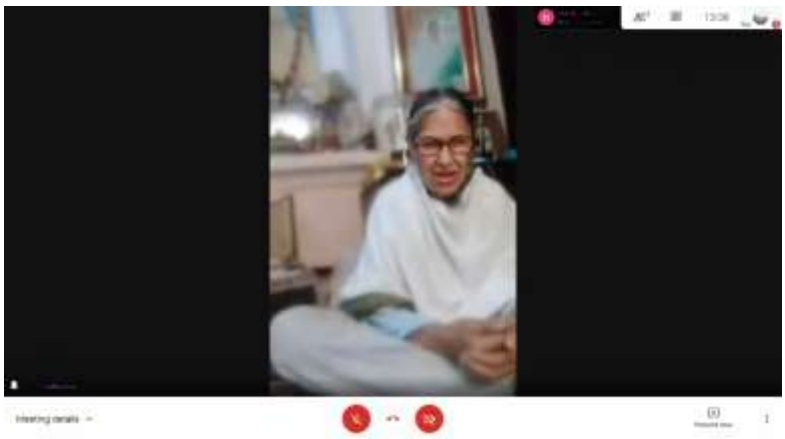

"गाँधी उत्सव '21"

"ऐसे जियो जैसे कि तुम कल मरने वाले हो। सीखो जैसे कि तुम हमेशा के लिए जीने वाले हो।"
~महात्मा गाँधी

गाँधी स्टडी सर्कल, कमला नेहरू कॉलेज , दिल्ली विश्वविद्यालय, आज इस शुभ अवसर पर पूरे देश को गाँधी जयंती की हार्दिक शभुकामनाएं देता है। आइए हम अपने जीवन में महात्मा गाँधी जी के मूल्यो को आत्मसात करें और राष्ट्र के लिए उनके सघंर्षों और बलिदानों को याद करने के लिए अपने व्यस्त जीवन से कुछ समय निकालें।

गाँधी जयंती के अवसर पर, कमला नेहरू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के गाँधी स्टडी सर्कल ने "गाँधी उत्सव, 2021" का आयोजन किया।कार्यक्रम मे प्रो. श्यौराज सिहं बेचेन', विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय और '.डॉ भपू ंद्र सिहं ', प्राचार्य गाँधी स्मारक डिग्री कॉलेज, एमजेपीआर विश्वविद्यालय, बरेली आमंत्रित वक्ता थे। उनके द्वारा हमें प्रेरणादायक और सचूनात्मक व्याख्यान सुनने का अवसर प्राप्त हुआ ।

हमारे दोनों वक्ता अत्यधिक विद्वान और बद्धिमत्तावान शख्सियत हैं और उन्हें किसी परिचय की आवश्यकता नहीं है या यूँ कहें उनका परिचय देना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। जहाँ प्रोफेसर श्योराज सिंह बेचैन ने इस बात पर ज़ोर दिया कि गाँधीवादी विचारधारा आज के समय की आवश्यकता क्यों हैं, वहीं डॉ सिहं ने गौरवशाली इतिहास और राष्ट्रपिता के सघंर्षों के बारे में बताया।

आज उनका हमारे कार्यक्रम में उपस्थित होना, वास्तव में बहुत खुशी की बात थी । उनके माध्यम से हमने गाँधीवादी मूल्यो के बारे में गहराई से जाना।

कार्यक्रम का प्रबधंन और संचलान हमारी शिक्षक संयोजिका 'डॉ संगीता वर्मा ' ने किया। कार्यक्रम की शुरुआत छात्रा संयोजका अनन्या पाण्डेय ने की। कार्यक्रम का समापन छात्रा सह संयोजिका खुशी अग्रवाल द्वारा किया गया। व्याख्यानों के अंत में गाँधी स्टडी सर्कल द्वारा आयोजित पिछले कई वर्षों के गाँधी उत्सव के ऊपर बनाए गए बेहद खूबसूरत व यादगार वीडियो के साथ किया गया। कार्यक्रम में 60-70 छात्राएं हमारे साथ जुड़ी थी।

यह आयोजन एक बड़ी सफलता थी और इसने दर्शको को अत्यधिक प्रेरित किया और राष्ट्र के लिए देशभक्ति की भावना को भी जागृत किया ।

गाँधी स्टडी सर्कल
कमला नेहरू कॉलेज
(दिल्ली विश्वविद्यालय)
प्रस्तुत करता है
गाँधी उत्सव '21
'गाँधी: एक शाश्वत विचारधारा'
दिनांक: 30 सितंबर 2021
समय: 1:00 बजे
वक्ता :-
विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय।
डॉ. भूपेंद्र सिंह
प्राचार्य

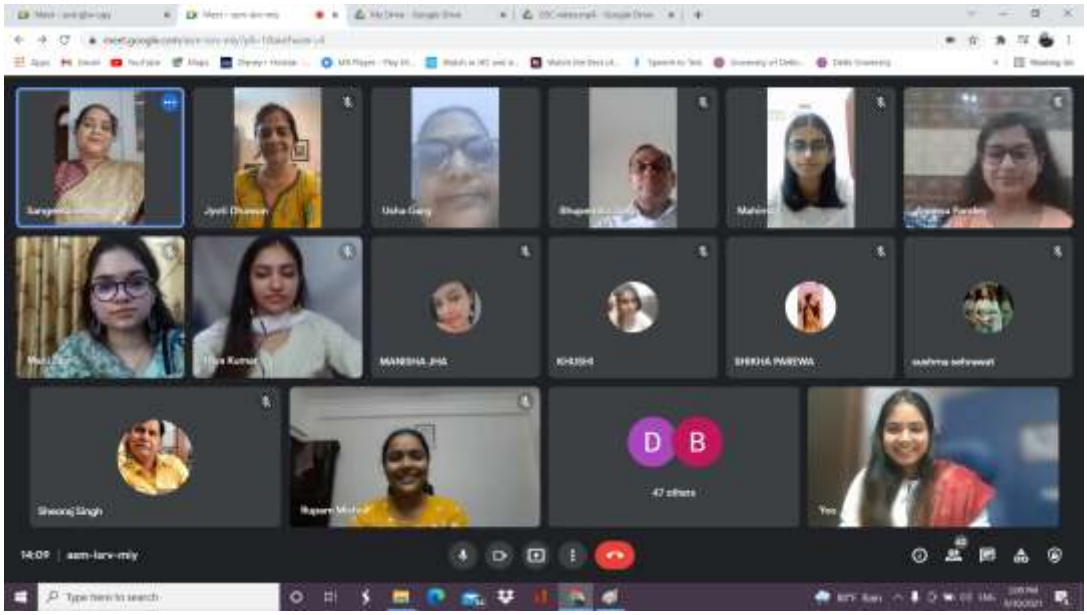

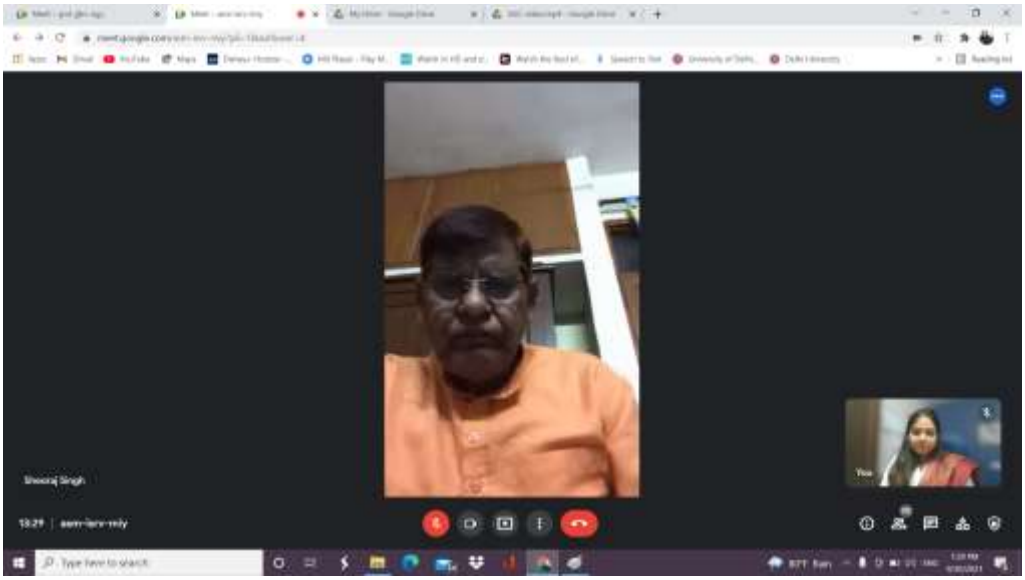

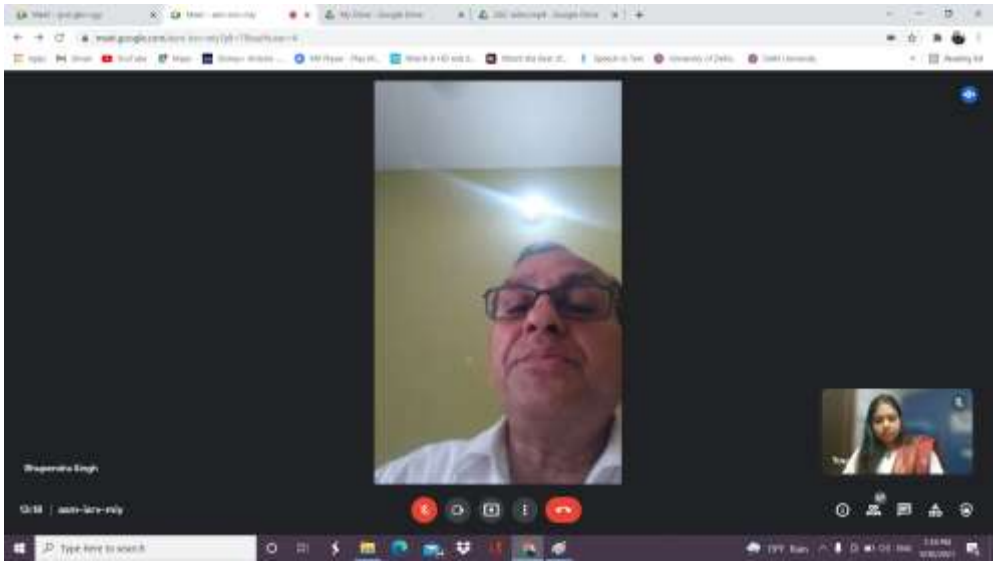

गाँधी स्टडी सर्कल, कमला नेहरू कॉलेज, ब.ए.हिंदी विशेष की द्वितीय वर्ष की छात्रा, सिमरन सैन को राजधानी कॉलेज द्वारा, गाँधी जयंती के उपलक्ष्य पर आयोजित कविता पाठ प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त करने पर हार्दिक बधाई देता है!

जानने के लिए, निम्नलिखित व्यक्तियों को संपर्क करें :-

डॉ. संगीता वर्मा (शिक्षक संयोजिका)

अनन्या पाण्डेय (छात्रा सयोजिका)

खुशी अग्रवाल (छात्रा उप सयोजिका)

या हमारे सोशल मीडिया हैंडल पर हमें फॉलो करें :-

इंस्टाग्राम

https://instagram.com/gsc.knc

फेसबुक

https://www.facebook.com/GSCKNC/